7

मेवाड़ में दशोरा परिवार

जनसंख्या (1.1.2006)

मन्दसोर से विस्थापित होकर आंरभ में केवल 3 ही परिवार वि.सं. 1362 (सन् 1305 ई.) में मेवाड़ में आये थे। बाद में समय–समय पर वि.सं. 1925 (सन् 1868 ई.) तक कुल 21 परिवार मेवाड़ मे आकर बस गये थे। इनमें से 3 परिवारों के वंशज नहीं रहे जिससे वर्तमान में कुल 18 परिवारों के वंशज ही यहाँ निवास कर रहे हैं जिनकी जनसंख्या सन् 1991 में मात्र 1733 थी जिनमें 236 व्यक्ति मेवाड़ से बाहर जाकर बस गये जिससे जनसंख्या 1497 ही रह गई।

आरंभ में मेवाड़ में सभी दशोरा परिवार गाँवों में ही रहते थे जिनको जागीरें आदि मिली थी। किन्तु उदयपुर की स्थापना वि.सं. 1616 (सन् 1559 ई.) के बाद कई परिवार जो बाद में आये थे वे उदयपुर में आकर बस गये। बाद में जागीरों के पुनर्ग्रहण सन् 1958 के बाद मेवाड़ से भी कई परिवार उदयपुर में आकर बस गये जिससे आज मेवाड़ में इस जाति के सर्वाधिक परिवार यहीं पर निवास करते हैं। उदयपुर के बाद सर्वाधिक दशोरा परिवार चित्तौड़गढ़ में रह रहे हैं।

दशोरा ब्राह्मणों के कुल 11 गोत्र है जिनमें कौरव्य, भार्गव, वराही, धनंजय, माण्डव्य, गोतम, कौशल्य, कोण्डिन्य, कापिस्टल, गर्ग और भारद्वाज है। इसके बाद कश्यप गोत्र के एक परिवार को बाद में मिला लिया गया जिससे वर्तमान में 12 गोत्र हो गये। इनमें से वराही और गर्ग गोत्र के परिवार इस समय नहीं रहे जिससे वर्तमान में दस गोत्र ही हैं।

इन गोत्रों में मेवाड़ में 6 गोत्र वाले दशोरा ही निवास कर रहे हैं– भार्गव, भारद्वाज, कौरव्य, कौशल्य, माण्डव्य एवं धनंजय। इन सभी परिवारों की संख्या निम्न प्रकार से है –

क्र. सं.	परिवार	कब आया (सन्)	निवास	गोत्र	परिवार संख्या	जनसंख्या
1.	बसन्तराय के परिवार	1305	1 सांवता	भार्गव	18	79
			2 घोसुण्डा	भार्गव	26	165
			3 डूमखेड़ा	भार्गव	15	79
			4 मोहणा	भार्गव	3	28
			योग		62	351
2.	भट्ट धनेश्वराय	1305	पंचदेवला	भार्गव	0	0
3.	भट्ट विष्णु	1305	चित्तौड़	भार्गव	0	0
4.	भोगीदास जी	1468	अरण्या	कौरण्य	33	162
5.	भास्कर जी	1495	बैठूम्बी	भारद्वाज	71	379
			खीलचीपुर	भारद्वाज	10	48
			योग		81	427
6.	गंगा जी	1518	उदयपुर	भार्गव	26	126
7.	कोमल जी	1525	घोसुण्डी	भारद्वाज	36	195
8.	सांवलदास जी	1607	पंचदेवला	कौरव्य	0	0
9.	जगराम, पेमा, भेरू, मोडा	1645	गोयत	कौरव्य	22	119
10.	वृन्दावन जी	1672	मालीखेड़ा	कौरव्य	26	154
11.	धनंजय गोत्र परिवार	1673	उदयपुर	धनंजय	4	16
			भैसरोगढ़	धनंजय	4	17
			योग		8	33
12.	मना जी	1707	देलवाड़ा	माण्डव्य	13	55
13.	जै राम जी	1724	उदयपुर	कौरव्य	2	9
14.	माणक लाल जी	1799	उदयपुर	माण्डव्य	13	61
15.	टेकचन्द जी	1799	उदयपुर	माण्डव्य	17	86
16.	सवदास जी	1799	उदयपुर	माण्डव्य	3	10
17.	छोटू जी	1843	बेठूम्बी	भारद्वाज	4	47
18.	सीताराम जी	1868	उदयपुर	कौरव्य	1	6

क्र.सं.	परिवार	कब आया (सन्)	निवास	गोत्र	परिवार संख्या	जनसंख्या
19.	नन्दलाल जी धन्नालाल जी बृज किशोर जी	–	गोयत	माण्डव्य	4	19
20.	देवीलाल जी	–	जालखेड़ा	कौरव्य	1	5
21.	नावली परिवार	–	मातासरा	कौशल्य	12	84
			कुआखेड़ा	कौशल्य	7	39
			बेगूं	कौशल्य	1	6
			छोटी सादड़ी	कौशल्य	2	11
			जालखेड़ा	कौशल्य	5	19
			झरझणी	कौशल्य	5	33
			योग		32	192
कुल परिवार		–			384	2057

गोत्रानुसार परिवार संख्या

क्र.सं.	गोत्र	कुल परिवार	जनसंख्या
1.	भार्गव	– 88	474
2.	भारद्वाज	– 121	669
3.	कौरव्य	– 85	455
4.	माण्डव्य	– 50	231
5.	कौशल्य	– 32	192
6.	धनंजय	– 8	33
	योग	384	2057

इन परिवारों में कुल 42 परिवार मेवाड़ से बाहर जाकर बस गये जिनकी जनसंख्या 267 हैं। अतः वर्तमान में मेवाड़ की कुल 342 परिवार ही रह रहे है जिनकी जनसंख्या 1790 ही है। किन्तु इनका सम्बन्ध मेवाड़ से बना हुआ है।

8

उदयपुर में दशोरा परिवार

जनसंख्या (1-1-2006)

चित्तौड़गढ़ पर बार–बार मुगलों के आक्रमणों के कारण महाराणा उदय सिंह ने सर्वप्रथम वि.सं. 1616 (सन् 1559 ई.) में उदयपुर को अपनी राजधानी बनाया। इसके राजधानी बनने के बाद सर्व प्रथम वि.सं. 1925 (सन् 1868 ई.) तक आठ परिवार ही उदयपुर में आकर बसे थे जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

क्र.सं	परिवार	कब आया (सन्)	कहाँ से आया	गोत्र	वर्तमान परिवार संख्या	जनसंख्या
1.	गंगा जी परिवार	1603	देलवाड़ा	भार्गव	26	124
2.	धनंजय परिवार	1673	भैसरोड़गढ़	धनंजय	4	16
3.	जै राम जी परिवार	1724	भुवाणा	कौरव्य	2	9
4.	टेकचन्द जी परिवार	1799	डूँगरपुर	माण्डव्य	17	86
5.	माणकलाल जी परिवार	1799	डूँगरपुर	माण्डव्य	13	61
6.	सवदास जी परिवार	1799	डूँगरपुर	माण्डव्य	3	10
7.	चतरा जी परिवार	1820	सलूम्बर	भार्गव	8	55
8.	सीताराम जी परिवार	1868	देवास	कौरव्य	1	6
		कुल परिवार		–	74	367

गोत्रानुसार परिवार संख्या

क्र.सं.	गोत्र	कुल परिवार	जनसंख्या
1.	भार्गव	– 34	179
2.	धनंजय	– 4	16
3.	कौरव्य	– 3	15
4.	माण्डव्य	– 33	157
	योग	74	367

इन परिवारों के बाद अन्य भी कई परिवार समय–समय पर उदयपुर में आकर बसते रहे जिनमें अधिकांश परिवार जागीर पुनर्ग्रहण के बाद आये तथा इन्होंने यहाँ अपने स्थाई निवास बना लिये। इनकी परिवार व जनसंख्या निम्न प्रकार है। यह गणना दिनांक 1 जनवरी 2006

की है। इनमें सर्वाधिक 34 परिवार बेठूम्बी से आकर बस गये तथा बाकी 15 गाँवों से कुल35 परिवार यहाँ आये जिनकी कुल जनसंख्या 355 है। तथा 26 परिवार अस्थाई रूप से निवास कर रहे है जिनकी जनसंख्या 93 है।

इस प्रकार वर्तमान में (1.1.2006 को) यहाँ कुल 169 परिवार निवास कर रहे हैं जिनकी कुल जनसंख्या 815 है। इनका विवरण निम्नानुसार है।

क्र.सं	कहाँ से आये	गोत्र	परिवार संख्या	जनसंख्या
1.	बेठूम्बी	भारद्वाज कौशल्य	33 1	184 5
2.	सांवता	भार्गव	4	18
3.	घोसुण्डी	भारद्वाज	2	14
4.	कैलाशपुरी	भार्गव माण्डव्य	1 1	14 1
5.	धनेरिया	कौशल्य	2	8
6.	मालीखेड़ा	कौरव्य	6	29
7.	जालखेड़ा	कौशल्य	5	13
8.	मोहणा	भार्गव	1	10
9.	गोयत	कौरव्य	3	15
10.	घोसुण्डा	भार्गव	1	5
11.	बेगूं	कौशल्य	2	5
12.	देलवाड़ा	माण्डव्य	2	11
13.	रामपुरा	कौरव्य	1	9
14.	अरण्या	कौरव्य	2	6
15.	चित्तौड़गढ़	भारद्वाज	1	6
16.	रावतभाटा	माण्डव्य	1	2
	योग		69	355
15.	अस्थाई निवास		26	93
	कुल परिवार उदयपुर में		169	815

उदयपुर में कुल गोत्रानुसार परिवार

क्र.सं.	गोत्र	कुल परिवार	जनसंख्या
1.	भारद्वाज	– 52	265
2.	कौशल्य	– 12	39
3.	भार्गव	– 44	238
4.	माण्डव्य	– 38	174
5.	कौरव्य	– 19	83
6.	धनंजय	– 4	16
	योग	169	815

इन परिवारों में वर्तमान में 15 परिवार मेवाड़ से बाहर इन्दोर, उज्जैन, जयपुर, अहमदाबाद तथा मुम्बई में निवास कर रहे है जिनकी कुल जनसंख्या 77 है। अतः वर्तमान में उदयपुर में कुल 154 परिवार ही है जिनकी जनसंख्या 738 है।

स्वर्ण वाक्य

- हम व्यर्थ की बातें सीख लेते हैं जिससे मूल्यवान के लिए समय नहीं मिलता।
- उस्ताद का जुल्म बाप की मोहब्बत से अच्छा है। (शेखसादी)
- भेड़िया खाल फाड़ना ही जानता है, सीना नहीं जानता। (शेखसादी)
- छोटे कद वाला बुद्धिमान लम्बे चौड़े मूर्ख से कहीं अच्छा होता है। (शेखसादी)
- पश्चिम में यदि कोई पहुँचा हुआ आत्मज्ञानी होतो वह पागल समझा जायगा क्योंकि वह सामान्य से भिन्न होता है किन्तु भारत में उल्टा है। यहाँ कई पागल भी पहुँचे हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि वह भी सामान्य से भिन्न व्यवहार करता है। (रजनीश)
- माता–पिता, भगिनी, बन्धु, स्त्री, पुत्र–पुत्री, और सेवक–सेविका, इनके साथ विवाद मत करो। (मनु)
- भाग्य जिसे प्यार करता है, उसे मूर्ख बना देता है। (फ्रेंकालिन)